भट्टारक वर्द्धमान प्रथम

जीवन-परिचय : भट्टारक वर्द्धमान प्रथम आचार्य पद्मनन्दि की परम्परा में हुए हैं। इन्होंने अपने गुरु का नाम भी निर्देशित नहीं किया है। इनके बारे में अधिक परिचय ज्ञात नहीं होता है। इन्हें 'परवादिपंचानन' की उपाधि प्राप्त थी।

भट्टारक वर्द्धमान का समय ई. सन् की 14वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा रचित ग्रन्थ एक है—

1. वराङ्गचरित : भट्टारक वर्द्धमान प्रथम ने संस्कृत भाषा में 'वराङ्गचरित' नामक महाकाव्य लिखा है। इसमें 13 सर्ग हैं। वराङ्ग, 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ और श्रीकृष्ण के समकालीन धीरोदात्त नायक हैं। प्रस्तुत काव्य में 1383 श्लोक हैं।